शुभ कल्पना गीत

स्वर्ग होगा इस धरा पर ऐसी अपनी कल्पना .
शुभ ही होगा इस धरा पर ऐसी अपनी कल्पना ..

वर्षों से अतृप्त जीवन अर्द्ध जागृत ही रहा .
जीवन यह जागृत ही होगा ऐसी अपनी योजना ..
शुभ ----

प्रिय, हित और लाभ तक, सीमित अब तक हम रहे .
न्याय, धर्म, सत्य पथ होगा ऐसी अपनी योजना ..
शुभ ---

अस्तित्व में सहअस्तित्वता से पूरकता का कर निर्वाह .
लक्ष्य स्वराज्य ही होगा ऐसी अपनी योजना ..
शुभ ----

प्रदीप.

* जून १९९४ *

शुभ संकेत गीत

शुभ संकेत जीवन विद्या का आगे बढ़ते जाना है .
आगे बढ़ते जाना हमको आगे बढ़ते जाना है ..

गुरु-शिष्य का नाता यह तो पिता-पुत्र सम्बन्ध जैसा .
शुभ प्रयोजन में शिक्षा का हमको बोध कराना है ..
शुभ ---

शिक्षा और संस्कार से ही व्यक्ति प्रमाणित होता है .
शुभ शिक्षा-संस्कार सुलभ हो पथ ऐसा अपनाना है ..
शुभ ---

बच्चे ही तो आगे चलकर भविष्य निर्माता बनते .
शुभ परम्परा बहे निरन्तर इनका उत्साह बढ़ाना है ..
शुभ ---

प्रदीप.

* जून १९९४ *

उत्सव गीत

जन-जन होंगे प्रसन्न सभी उत्सव मनाएंगे .
परिवार में होगा न्याय शान्तिमय उत्सव मनाएंगे ..

ग्रामों में मानव शिक्षा का सुअवसर सबको होगा,
व्यवसाय होगा मानवीय, स्वावलम्बन होगा ..
(धर्म में होगा समाधान), सन्तोषमय उत्सव मनाएंगे ..
होगा समाधान धर्म में -
जन ---

ग्रामों के सहअस्तित्व से सुन्दर राष्ट्र बनेगा,
सुख-समृद्धि से ओत-प्रोत स्वर्णिम राष्ट्र बनेगा ..
सत्य होगा प्रामाणिक, आनन्दमय उत्सव मनाएंगे .
जन ---

राष्ट्र मिलकर विश्वकल्पना को साकार करेंगे,
विश्व बन्धेगा स्नेहसूत्र में स्नेहित सभी रहेंगे ..
स्वराज्य होगा अभयपूर्ण, मंगलमय उत्सव मनाएंगे .
जन ---

प्रदीप.

* जून १९९४ *

मंगल गीत

जन्म लिया जिस पर हमने उस जन्मभूमि पर मंगल हो,
कार्य करें हम मिलकर शुभ के कर्मभूमि पर मंगल हो ..

माँ की ममता में लक्ष्य हो जीवन को जागृत करना,
शिशु पोषण-संरक्षण को तन-मन-धन से पूरा करना ..
आचरण में हो उदारता, मातृभूमि पर मंगल हो ..
कार्य ---

पथ प्रदर्शकों के प्रति कृतज्ञता का भाव रहे,
जीवन-विद्या स्रोतों के प्रति मन में श्रद्धा का भाव रहे ..
आचरण में हो मानवता, पुण्यभूमि पर मंगल हो ..
(हो मानवता, आचरण में,)
कार्य ---

विशेष से हम सहज होकर प्रेम मूल्य अभिव्यक्त करें,
जीवन-रूप में सब समान हैं, सर्व समक्ष यह व्यक्त करें ..
जागृत हों सब मानव जीवन, विश्वभूमि पर मंगल हो ..
कार्य ----

प्रदीप.

* जून १९९४ *

उत्साह गीत

मेरे साथ चलो,
सब साथ चलो,
प्रसन्नता, उत्साह के साथ ।
स्वानुशासन से,
स्वराज्य तक,
बढ़ो सभी उत्साह के साथ ॥

* सबको ही जागृत होना है.
इस बार अवश्य होना है.
लेना संकल्प,
है दृढ़ संकल्प,
बोध पूर्वक उत्साह के साथ ।
मेरे - - -

* चाहे किसी देश का वासी हो,
कोई भी भाषा-भाषी हो,
विनम्र(पूर्वक) होकर
प्रेम पूर्वक,
चलना है सबको अपने साथ, ।
मेरे - - -

* संग सभी को लेकर,
जीवन विद्या को समझाकर,
विश्वास से,
अपनत्व से,
स्वराज्य हेतु चलना है साथ
मेरे - - - -

प्रदीप.
* अगस्त १९९४ *

जीवन-गीत

मैं जीवन हूँ तुम जीवन हो जीवन रूप में सब समान हैं.
हर जीवन को है जागृत होना जागृत जीवन में समाधान है..

* वर्षों से सुख हेतु मानव क्या-क्या करता आया,
प्रिय, हित और लाभ में ही बस सुख को ढूँढ़ता आया.
न्याय, धर्म और सत्य जिसमें, उस जीवन में सुख विद्यमान है.
मैं - - -

* न्याय को हमने बाहर ढूंढा परिवार में मिलता न्याय.
व्यवहार में हो जब मानवता तो सबको मिलता न्याय..
न्याय से जीवन में शान्ति आये, परिवार ही इसका शुभ स्थान है.
मैं - - -

* धर्म की भाषा-परिभाषा में उलझे युगों-युगों से,
धर्म कहाँ है इसका उत्तर खोजा युगों-युगों से..
व्यवस्था में है धर्म समाया, स्वराज्य में यह समाधान है.
मैं - -

* सत्य सुनो और सत्य ही बोलो कहते हम सबको हैं,
आचरण में अपने क्या है, दिखता वह सबको है,
आचरण में हो प्रामाणिकता, सत्य का यह शुभ सम्मान है..
मैं - - -

प्रदीप.
* अगस्त १९९४ *

लक्ष्य गीत

आओ तुम, गीत सुनाऊँ
एक नया संगीत सुनाऊँ ..

* देखो कितना सुख ही सुख है (समाया)
अस्तित्व में सह अस्तित्व ही है (समाया)
सहअस्तित्व में ही सुख की बात समायी,
हर व्यक्ति में सुख की आस समायी :
आओ तुमको सुख की आस बँधाऊँ .
जीवन विद्या से विश्वास बँधाऊँ ..
-----

* सब कुछ अपने पास है पहले से ही .
देह मिली यह श्रेष्ठ पहले से ही :
कर्मेन्द्रियाँ हैं कर्म स्वरूप कर्म करने को,
ज्ञानेन्द्रियाँ हैं समझ पूर्ण करने को ..
मानव देह है कितनी श्रेष्ठ बताऊँ .
जीवन होगा जाग्रत इसमें बताऊँ ..
----

* हम क्या हैं, और कौन, क्यों हम आये.
क्या करना है, क्यों मानव देह यह पाये ..
मैं जीवन, तुम जीवन व्यक्ति सभी .
जीवन जाग्रत हो कुछ करें सभी ..

लक्ष्य हमारा क्या स्पष्ट बताऊँ .
स्वानुशासन - स्वराज्य तक ले जाऊँ ..

——*

—— प्रदीप.

* अगस्त १९९४ *

जीवन रूप गीत

जीवन क्या है आओ इसे पहचानें हम,
चैतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम ..

* जीवन में होता है मन, मन में होती है आशा,
चयन - आस्वादन क्रिया होतीं मन करता जब आशा ..
आशा अपनी शुभ ही हो यह मानें हम .
चैतन्य - - -

* वृत्ति होती जीवन में, वृत्ति में होते हैं विचार
तुलन - विश्लेषण क्रिया होती, विस्तृत होते हैं विचार ..
विचार करेंगे शुद्ध यही अब जानें हम,
चैतन्य - - -

* चित्त होता जो जीवन में उसमें होती है इच्छा,
चिन्तन - चित्रण क्रिया होतीं विशुद्ध होती इच्छा ..
इच्छा हो चिन्तन की यह पहचानें हम,
चैतन्य - - -

* बुद्धि होती जीवन में जो होता उसमें संकल्प है,
बोध - संकल्प की क्रिया में लेना हमको संकल्प है,
बोध होता सत्य का ही यह जानें हम .
चैतन्य - -

* जीवन में जो आत्मा है उसमें होता है अनुभव,
प्रामाणिकता - स्वानुशासन क्रिया का होना इसमें वैभव ..
दसों क्रियाएं अविभाज्य यह पहचानें हम,
चैतन्य - - -

—— प्रदीप.

* अगस्त १९९४ *

विश्वास-गीत

हम गाते हैं एक गीत नया,
सब मिलकर साथ- हाँ साथ-साथ।

* विश्वास हो गया हमको है.
कोई ऐसी भी विद्या है.
जो दुःख-पीड़ा में देती साथ.
निरन्तरता सुख में रहती साथ.
हम ---

* हम कार्य करेंगे पूरे सभी.
छोड़े जो हमने अधूरे कभी..
न्याय, धर्म, सत्य के साथ.
शान्ति, सन्तोष, आनन्द के साथ..
हम ---

* है जीवन-विद्या ही ऐसी.
स्पष्ट सभी बातें, कैसी.
प्रामाणिक है प्रमाण के साथ.
रहती जीवन के साथ-साथ.
यह पूरकता में साथ-साथ.
है सम्बन्धों में साथ-साथ.
मूल्यों के साथ-मानव के साथ.
है आचरण में साथ-साथ.
स्वानुशासन में स्वराज्य में,
जागृत जीवन के साथ-साथ.
समृद्धि में, सह अस्तित्व में,
सम्पृक्त अस्तित्व में साथ-साथ।

—— प्रदीप.
अगस्त १९९४

हम वन्दना करें
हम वन्दना करें
उन पथ प्रदर्शकों की
उन सत्यान्वेषियों की
हम वन्दना करें -२
जिनसे है मार्गदर्शन
उनके कृतज्ञ हैं हम
हम वन्दना करें -२

कामना

भूमि ही स्वर्ग होगी
मनुष्य होंगे देवता
धर्म सफल हो जायेगा
नित्य मंगल होगा
हम कामना करें -२

संकल्प

मैं मानव,
न्यायपूर्ण व्यवहार करूँगा
धर्मपूर्ण विचार करूँगा
सत्य को अनुभव करूँगा
धीरता वीरता उदारतापूर्वक
व्यवस्था को साकार करूँगा
जय हो। मंगल हो। कल्याण हो।

---

12 जुला[illegible]

आदरणीय बाबा जी,

नित्य उत्सव कामना

यहाँ सब कुशलतापूर्वक चल रहा है। मामा जी, रणसिंह एवं देशपाल के साथ संयुक्त कार्यक्रम चल रहा है।
रणसिंह जी यहाँ 19 तक रहेंगे।
सत्य जी ने दिसम्बर तक की दिने शिविरों के लिए दी है। यहाँ अगस्त 6 से 24 तक शिविर निश्चित हो गया है। स्कूल भी अच्छी तरह चल रहा है। समाधान के लिए आपका स्मरण ही पर्याप्त है।
बाबा जी पिछले पत्र में मैंने आपको जिन दिनो का निमन्त्रण दिया। उसमें कुछ बदलाव है।
सत्य जी एवं रणसिंह ने तय किया है कि आप 24 सितम्बर तक आश्रम पहुँचे। 10 से पूर्व आपका रिजर्वेशन हो जायेगा
25 से 3 ता० तक।

अर्थात
25 सितम्बर से 3 अक्टुबर तक शिविर का निश्चय हुआ है।

देशपाल की गति अच्छी है। अशोक दिल्ली गया है। जल्दी ही वापस आयेगा। मामा जी स्कुल की इमारत बनाने मे लगे है। आशा है अक्टुबर मे आपके आने से पूर्व सारा बन कर तैयार हो जाये।
रणसिंह भी विद्यालय मे कुछ कुछ पढ़ाते रहते है।
इस पत्रक के पीछे विद्यालय की वन्दना है। कैसी बनी। और क्या होना चाहिए। निर्देशित करें।

शेष शुभ

आपका शिव

P.S. परिवार मे छोटे बच्चे प्यार एवं बड़ो को

वन्दना

हम वन्दना करें
हम वन्दना करें

उन पथ प्रदर्शकों की
उन सत्यांवेशियों की
हम वन्दना करें -२
जिनसे है मार्गदर्शन
उनके कृतज्ञ हैं हम
हम वन्दना करें -२

कामना

भूमि ही स्वर्ग होगी
मनुष्य होंगे देवता
धर्म सफल हो जायगा
नित्य मंगल होगा
हम कामना करें -२

संकल्प

मैं मानव,
न्यायपूर्ण व्यवहार करूँगा
धर्मपूर्ण विचार करूँगा
सत्य को अनुभव करूँगा
धीरता वीरता उदारतापूर्वक
व्यवस्था को साकार करूँगा

जय हो। मंगल हो। कल्याण हो।

जीवन-काव्य

"मनुज से ही मनुजता संभाव्य है
मनुजता ही मनुज कुल का काव्य है"

मनुज को रख केन्द्र में चिंतन करूं
केन्द्र का क्या मूल है मंथन करूं
क्या हुआ, क्या हो न पाया आज तक
लेखनी ले हाथ में अंकन करूं.

जब सही चिन्तन करूंगा तथ्य का
तब प्रमाणित अर्थ होगा कथ्य का
ज्ञात होने पर कि क्या है सत्यता
भ्रम रहेगा शेष न रहस्य का

जो प्रमाणित कर न पाऊं, न कहूं,
आवेश में आ भावना के न बहूं
सुख की निरन्तर साम्य सबमें कामना
होती यही फलीभूत मैं सबसे कहूं.

जो प्रमाणित है वही तो आप्त है
अस्तित्व में तो आप्तता ही व्याप्त है
विकास क्रम में यह हुआ अध्ययन सुलभ
सृष्टि-दर्शन मनुज भर को प्राप्त है.

पूर्व इसके लेखनी को दूं गति
कृतज्ञता ज्ञापित मेरी उनके प्रति
जिनके सही चिंतन-मनन-संधान से
यथार्थता के स्रोत सारे आज जीवित

कृतज्ञता होती नहीं तो किस तरह
विकास का क्रम ज्ञात होता इस जगह
मत-विचारों पर हुआ चिंतन ~~सतह~~ सतत
नव रोशनी ले साथ आई हर सुबह

नर्मदा उद्गम स्थली की गोद में
तत्व-दर्शन के निरन्तर बोध में
सफल जिनकी हो सकी है साधना
उन श्री नगराज महाराजजी की अर्चना
करता रहूं पल-पल यही है प्रार्थना.
प्रार्थना ही बन सके नित वन्दना.
प्रार्थना से बल मुझे इतना मिला
समग्र तत्व अंकुरित पौधा खिला
ज्ञानमयता की महक हर ओर है.
सम्पृक्त जिसमें हर दिशा हर छोर है.

इस मनीषी को मेरा पहला नमन
सोच के उज्ज्वल खिले इनसे सुमन
अज्ञानता के मेघ काले छाँटकर
मनुजता से भर दिये अन्तःकरण.

हाँ उन्हीं की सोच को दे शब्द अपने
काव्य के कुछ छंद बैठा आज लिखने
गुरु-मण्डल की सघन इस छाँव में
मैं चला हूं रम्यता में और रमने.

मध्यस्थ-दर्शन के प्रणेता युग-पुरुष
तुम पुरुष के रूप में हो सत्-पुरुष
सत्-पुरुष के आप्त वचनों का श्रवण
अपनी-दिशा में ले चला मेरे चरण.

उपदेश इनके मान हैं प्रतिमान हैं
सूत्र इनके ज्ञान हैं विज्ञान हैं
काल सीमा से परे की ज्ञानमयता
गुण-गणित कारण सधे संधान हैं

पूर्व इनके जो मनीषी कह गए
समीक्षा के पात्र बनकर रह गए
शुष्क नदियां जिन विचारों से बहीं
तृप्तकांक्षी लोग प्यासे रह गए।

जो आ सका न आचरण में वह कहा
जो पा सका आकार न, वह ही गहा.

हाँ अतीती सोच के बादल सघन
आग से झुलसा गए मानव-बदन
जो मनुज को मिल सका उस सोच से
वह प्रकाशित कर रहा हर आचरण.

~~एक यह धरती विभाजित हो गई~~
~~दानवीयता से विराजित हो गई.~~

~~पाशविकता से पराजित हो गई.~~

एक यह धरती विभाजित हो गई
मानवीयता ही तिरोहित हो गई
पाशविकता में मनुज कुछ बद्ध हैं
कुछ दानवों के पाश में आबद्ध हैं.

मैं मनुज हूँ इसलिए यह लिख रहा हूँ
पशु-दानव सा भला क्यों दिख रहा हूँ
यह व्यथा मेरी झकोरे है मुझे
मनुजता मेरी पुकारे है मुझे.

हाँ विरासत में मिली है लेखनी
हैं दिशाएं शेष, जो हैं देखनी
इसलिए उस भाव को मैं टेरता हूँ
स्पर्श अपना दे मुझे जो, हेरता हूँ.

समय फिर शायद मिले न यह दुबारा
इसलिये उर देर ने तुमको पुकारा
तुमने सुनी आवाज़ है इसको निहारो
ज्ञान-निर्मल-धार से मुझको निखारो.

लेखनी की नोक पर आ बैठ जाओ
निश्चलता की धार में आ पैठ जाओ.

जो लिखूं ऐसा लगे हो ~~एक~~ आत्म दर्पण
बिम्ब उभरे और उकरे जीवन-दर्शन

मनुजता की दे रहा सौगंध तुमको
हाँ तुम्हारी ही पुकारे गंध तुमको
तुम मेरे आकाश पर दमको नखत सा
टेरते हैं अनरचे कुछ छंद तुमको

दूर कब तक तुम स्वयं से जाओगे
लौट कर तुम खुद स्वयं में आओगे

तुम तुम्हारा वृत्त ही विस्तार है
वृत्त का विस्तार ही संसार है
साहित्य ही संसार का श्रृंगार है
और जो अतिरिक्त है निस्सार है.

"मानवों में मनुजता ही व्याप्य है
व्याप्त है जो हर दिशा वह काव्य है"

मनुज से ही मनुजता संभाव्य है
मनुजता ही मनुज कुल का काव्य है।

०

अशोक-शर्मा
अभ्युदय-निवास
२६-बी मैत्री विहार
कोहका (सुपेला)
-भिलाई-

अवलोकन

प्रश्न देखी हैं घरा के लोग सारे
हैं दिशा की खोज में थे क्लांत हारे
उत्तरित ~~[illegible]~~ होते नहीं जो प्रश्न हैं
सुखाकांक्षी स्वप्न इनके भग्न हैं।

पूर्व के चिंतन नहीं उत्तर दिये
विचार-तकनीकी नहीं उत्तर दिये
साहित्य ने जो भी दिया ~~[illegible]~~ (वर्जित दिया)
कला के लालित्य ने ~~[illegible]~~ (अर्जित दिया)

सोचते जो भोगते प्रारब्ध है
प्रारब्धता से हर कोई आबद्ध है
हारकर बैठे हुए हैं हारकर
झेलते हर आपदा सिर डालकर

यह विगत की सोच का परिणाम है
आहत हुई जिससे सुबह हर शाम है
जो रहा जिस सोच में वह ही मिला
रोपा किया जो बाग में वह ही खिला।

केन्द्र में ईश्वर रखा, चिंतन दिया
रहस्य की कारा रहा मंथन दिया
खोखले आदर्श का वंदन दिया
जो सघन पीड़ा करे बंधन दिया।

रहस्य में डूबा रहा जिस सोच का
रहस्य में कर्त्ता रहा जिस सोच का
उस सोच ने छलनी किया है वक्त को
और प्यासा कर दिया अतृप्त को।

ईश क्या है? अदृश्य है? अज्ञात है
नर श्रेष्ठ हैं जो बस उन्हें ही ज्ञात है
नर श्रेष्ठ को ज्ञाता परम स्वीकार कर
सर्वज्ञ-पद तक पूजा गया जयकार कर

ईश्वर का वास है उस लोक में
पाप-पुण्य होते तुलित जिस लोक में
पूछा गया उस लोक का स्थान क्या?
लोक के स्थान की पहिचान क्या?

उत्तर मिला यह जानने का हक नहीं
प्रश्न कर्त्ता मूढ़ है लायक नहीं।

केन्द्र में वस्तु रखा, चिंतन दिया
ज्ञान बस विज्ञान है मंथन किया
पदार्थ से ही चेतना निर्मित हुई (निर्मित हुई)
विज्ञान में ये चेतना वर्णित हुई।

दृश्य तक माना गया अस्तित्व है
आंकलन में आ सका अनित्व है
भोग के साधन निरन्तर खोज कर
विषय के अवयव निरन्तर भोग कर

भोग तक विकसित ~~क्या हुआ~~ किया विज्ञान को
भोगी ~~बना~~ बनाकर रख दिया इंसान को

योग में कुयोग में अतृप्तता
साधनों की अल्पता - अतृप्तता
काम के उन्माद में पागल हुआ
अतृप्तता की मार से घायल हुआ

पूछा गया विज्ञान का ~~व~~ उत्कर्ष क्या?
विज्ञान के उत्कर्ष का निष्कर्ष क्या?
उत्तर मिला इस प्रश्न का अर्थ क्या?
विज्ञान का श्रम होगया है व्यर्थ क्या?

०

मनुज ने द्रष्टा नहीं माना स्वयं को
मनुज ने कर्त्ता नहीं जाना स्वयं को
इसलिये तो हीनता उसमें जगी है
हीनता में दीनता मिलकर पगी है-

हां पशु सा जी रहे निरुपाय हैं
दीन हैं ये हीन हैं, असहाय हैं -
निरुपायता - असहायता वांछा नहीं
मनुज कुल की भी रही कांक्षा नहीं।

रहस्य में कर्त्ता सदा से मानकर
परवश मनुज ने दासता स्वीकारकर
रहस्य वादी सोच को पकड़े रखा
अर्थवादी सोच को जकड़े रखा -

इसलिये योगी नहीं, भोगी बना
मानसिकता में स्वयं रोगी बना
रूढ़ वादी खोखले चिंतन मिले
भोगवादी दोगले मंथन मिले।

इसलिये तो त्रस्त मानव त्रस्त है
त्रस्तता को झेलने में व्यस्त है
हां विचारों की अंधेरी घाटियां
लांघने में श्रम मनुज का पस्त है -

o

क्रूरता में जी रहे जो लोग हैं
वे समय की देह पर के रोग हैं
स्वयं में भय भीत हैं, भय दे रहे
क्रूरता की थाप, लय में दे रहे

आतंकता के फैलते परिवेश में
असुर विचरण है मनुज गणवेश में
असुरता में जी रहा संसार है
असुरता तो दानवी शृंगार है

दानवी संहार का विस्तार है
हर हृदय जलता हुआ अंगार है

~~भय-प्रलोभन की [illegible]~~

भय- प्रलोभन की घिरी हैं बदलियां
द्वेष ईर्षा की मचलती बिजलियां
संसार का नक्शा बहुत विद्रूप है
क्रूरता में तन नहाया रूप है

हां बहुत घायल हुआ है आदमी
हां बहुत पागल हुआ है आदमी
देश मुक्ति चाहता है आदमी
पहिचान अपनी चाहता है आदमी

मुक्त होना चाहता है, पशु-पन से
मुक्त होना चाहता है असुर-पन से
मुक्त होना चाहता है मनुज-पन से
मनुज पन से, देव-पन से, दिव्य-पन से

०

हैं धरा के लोग ये सौभाग्यशाली
और जिनके सोच आई समझ वाली
समझ कर निर्वाह कर जो पायेगा
हर कलुष अपना स्वयं धो पायेगा

प्रश्न-हीना यह धरा हो जायेगी
रोग-हीना यह धरा हो जायेगी
हां मुझे विश्वास है, विश्वास है
द्वेष-हीना यह धरा हो जायेगी।

१२-९-९५
प्रातः ५-३०

०

अशोक शर्मा
अभ्युदय-निवास
भिलाई

जीवन-काव्य

"मनुज से ही मनुजता संभाव्य है
मनुजता ही मनुज कुल का काव्य है"

मनुज को रख केन्द्र में चिंतन करूं
केन्द्र का क्या मूल है मंथन करूं
क्या हुआ, क्या हो न पाया आज तक
लेखनी ले हाथ में अंकन करूं.

जब सही चिन्तन करूंगा तथ्य का
तब प्रमाणित अर्थ होगा कथ्य का
ज्ञात होने पर कि क्या है सत्यता
भ्रम रहेगा शेष न रहस्य का

जो प्रमाणित कर न पाऊं, न कहूं.
आवेश में आ भावना के न बहूं
सुख की निरन्तर साम्य सबमें कामना
होती यही फलीभूत मैं सबसे कहूं.

जो प्रमाणित है वही तो आप्त है
अस्तित्व में तो आप्तता ही व्याप्त है
विकासक्रम में यह हुआ अध्ययन सुलभ
सृष्टि-दर्शन मनुज भर को प्राप्त है.

पूर्व इसके लेखनी को दूं गति
कृतज्ञता ज्ञापित मेरी उनके प्रति
जिनके सही चिंतन-मनन-संधान से
यथार्थता के स्रोत सारे आजीवित

कृतज्ञता होती नहीं तो किस तरह
विकास का क्रम ज्ञात होता इस जगह
मत-विचारों पर हुआ चिंतन ~~सतह~~ सतत
नव रोशनी ले साथ आई हर सुबह

नर्मदा उद्गम थली की गोद में
तत्व-दर्शन के निरन्तर बोध में
सफल जिनकी लेखनी हो सकी है साधना
उन श्री नगराज महाराजजी की अर्चना
करता रहूं पल-पल यही है प्रार्थना.
प्रार्थना ही बन सके नित वन्दना.
प्रार्थना से बल मुझे इतना मिला
समग्र तत्व अंकुरित पौधा खिला
मानवता की महक हर ओर है
सम्पृक्त जिसमें हर दिशा हर छोर है.

इस मनीषी को मेरा पहला नमन
सोच के उज्ज्वल खिले इनसे सुमन
अज्ञानता के मेघ काले छांटकर
मनुजता से भर दिये अन्तःकरण.

हाँ उन्हीं की सोच को दे शब्द अपने
काव्य के कुछ छंद बैठा आज लिखने
गुरु-मण्डल की सघन इस छांव में
मैं चला हूँ रम्यता में और रमने.

मध्यस्थ-दर्शन के प्रणेता युग-पुरुष
तुम पुरुष के रूप में हो सत्-पुरुष
सत्-पुरुष के आप्त वचनों का श्रवण
अपनी-दिशा में ले चला मेरे चरण.

उपदेश इनके मान हैं प्रतिमान हैं
सूत्र इनके ज्ञान हैं विज्ञान है
काल सीमा से परे की ज्ञान मयता,
गुण-गणित कारण सधे संधान हैं

पूर्व इनके जो मनीषी कह गए
समीक्षा के पात्र बनकर रह गए
शुष्क नदियां जिन विचारों से बहीं
तृप्ति-कांक्षी लोग प्यासे रह गए।

जो आ सका न आचरण में वह कहा
जो पा सका आकार न, वह ही अहा

हाँ अतीती सोच के बादल सघन
आग से झुलसा गए मानव-बदन
जो मनुज को मिल सका उस सोच से
वह प्रकाशित कर रहा हर आचरण।

~~एक यह धरती विभाजित हो गई~~
~~दानवीयता से विराजित हो गई~~

~~पाशविकता से पराजित हो गई~~

एक यह धरती विभाजित हो गई
मानवीयता ही तिरोहित हो गई
पाशविकता में मनुज कुछ बद्ध हैं
कुछ दानवों के पाश में आबद्ध हैं।

मैं मनुज हूँ इसलिए यह लिख रहा हूँ
पशु-दानव सा भला क्यों दिख रहा हूँ
यह व्यथा मेरी झकोरे है मुझे
मनुजता मेरी पुकारे है मुझे।

हाँ विरासत में मिली है लेखनी
हैं दिशाएं शेष, जो हैं देखनी
इसलिए उस भाव को मैं टेरता हूँ
स्पर्श अपना दे मुझे जो, हेरता हूँ।

समय फिर शायद मिले न यह दुबारा
इसलिये हर देर ने तुमको पुकारा
तुमने सुनी आवाज़ है इसको निहारो
ज्ञान-निर्मल-धार से मुझको निखारो।

लेखनी की नोक पर आ बैठ जाओ
निश्छलता की धार में आ पैठ जाओ।

जो लिखूं ऐसा लगे हो ~~एक~~ आत्म दर्पण
बिम्ब उभरे और उभरे जीवन-दर्शन

मनुजता की दे रहा सौगंध तुमको
हाँ तुम्हारी ही पुकारे गंध तुमको
तुम मेरे आकाश पर दमको नखत सा
टेरते हैं अन रचे कुछ छंद तुमको

दूर कब तक तुम स्वयं से जाओगे
लौट कर तुम खुद स्वयं में आओगे

तुम तुम्हारा वृत्त ही विस्तार है
वृत्त का विस्तार ही संसार है
साहित्य ही संसार का श्रृंगार है
और जो अतिरिक्त है निस्सार है।

"मानवों में मनुजता ही व्याप्य है
व्याप्य है जो हर दिशा वह काव्य है"

मनुज से ही मनुजता संभाव्य है
मनुजता ही मनुज कुल का काव्य है।

०

अशोक-शर्मा
अभ्युदय-निवास
३६-बी मैत्री विहार
कोहका (सुपेला)
- भिलाई -

जीवन-काव्य

" मनुज से ही मनुजता संभाव्य है
मनुजता ही मनुज कुल का काव्य है "

मनुज को रख केन्द्र में चिंतन करुं
केन्द्र का क्या मूल है मंथन करुं
क्या हुआ, क्या हो न पाया आज तक
लेखनी ले हाथ में अंकन करुं.

जब सही चित्रण करुंगा तथ्य का
तब प्रमाणित अर्थ होगा कथ्य का
ज्ञात होने पर कि क्या है सत्यता
भ्रम रहेगा शेष न रहस्य का

जो प्रमाणित कर न पाऊं, न कहूं
आवेश में आ भावना के न बहूं
सुख की निरन्तर साम्य सबमें कामना
होती यही फलीभूत मैं सबसे कहूं.

जो प्रमाणित है वही तो आप्त है
अस्तित्व में तो आप्तता ही व्याप्त है
विकास क्रम में यह हुआ अध्ययन सुलभ
सृष्टि-दृष्टि मनुज भर को प्राप्त है.

पूर्व इसके लेखनी को दूं गति
कृतज्ञता ज्ञापित मेरी उनके प्रति
जिनके सही चिंतन-मनन-संधान से
यथार्थता के स्रोत सारे आज जीवित

कृतज्ञता होती नहीं तो किस तरह
विकास का क्रम ज्ञात होता इस जगह
मत-विचारों पर हुआ चिंतन सतह सतत
नव रोशनी ले साथ आई हर सुबह

नर्मदा उद्गम स्थली की गोद में
तत्व-दर्शन के निरन्तर बोध में
सफल जिनकी लेखनी हो सकी है साधना
उन श्री नगराज महाराजजी की अर्चना
करता रहूं पल-पल यही है प्रार्थना.
प्रार्थना ही बन सके नित वन्दना.
प्रार्थना से बल मुझे इतना मिला
समझ वाला अंकुरित पौधा खिला
ज्ञानमयता की महक हर ओर है
सम्पृक्त जिसमें हर दिशा हर छोर है.

इस मनीषी को मेरा पहला नमन
सोच के उज्ज्वल खिले इनसे सुमन
अज्ञानता के मेघ काले छांटकर
मनुजता से भर दिये अन्तःकरण.

हाँ उन्हीं की सोच को दे शब्द अपने
काव्य के कुछ छंद बैठा आज लिखने
गुरु-मण्डल की सघन इस छाँव में
मैं चला हूं रम्यता में और रमने.

मध्यस्थ-दर्शन के प्रणेता युग-पुरुष
तुम पुरुष के रूप में हो सत्-पुरुष
सत्-पुरुष के आप्त वचनों का श्रवण
अपनी-दिशा में ले चला मेरे चरण.

उपदेश इनके मान हैं प्रतिमान हैं
सूत्र इनके ज्ञान हैं विज्ञान हैं
काल सीमा से परे की ज्ञानमयता,
गुण-गणित कारण सधे संधान हैं

पूर्व इनके जो मनीषी कह गए
समीक्षा के पात्र बनकर रह गए
शुष्क नदियां जिन विचारों से बहीं
तृप्ताकांक्षी लोग प्यासे रह गए।

जो आ सका न आचरण में वह कहा
जो पा सका आकार न, वह ही ग्रहा

हाँ अतीती सोच के बादल सघन
आग से झुलसा गए मानव-बदन
जो मनुज को मिल सका उस सोच से
वह प्रकाशित कर रहा हर आचरण।

~~एक यह धरती विभाजित हो गई~~
~~दानवीयता से विराजित हो गई~~

~~पाशविकता से पराजित हो गई~~

एक यह धरती विभाजित हो गई
मानवीयता ही तिरोहित हो गई
पाशविकता में मनुज कुछ बद्ध हैं
कुछ दानवों के पाश में आबद्ध हैं

मैं मनुज हूँ इस लिए यह लिख रहा हूँ
पशु-दानव सा भला क्यों दिख रहा हूँ
यह व्यथा मेरी झकोरे है मुझे
मनुजता मेरी पुकारे है मुझे।

हाँ विरासत में मिली है लेखनी
हैं दिशाएँ शेष, जो हैं देखनी
इसलिए उस नाव को मैं खेरता हूँ
स्पर्श अपना दे मुझे जो, हेरता हूँ।

समय फिर शायद मिले न यह दुबारा।
इसलिये डर देर ने तुमको पुकारा।
तुमने सुनी आवाज़ है इसको निहारो
ज्ञान-निर्मल-धार से मुझको निखारो.

लेखनी की नोक पर आ बैठ जाओ
निमन्त्रित की धार में आ पैठ जाओ.

जो लिखूं ऐसा लगे हो ~~एक~~ आत्म दर्पण
बिम्ब उभरे और उभरे जीवन-दर्शन

मनुजता की दे रहा सौगंध तुमको
हाँ तुम्हारी ही पुकारे गंध तुमको
तुम मेरे आकाश पर दमको नखत सा
टेरते हैं अन रचे कुछ छंद तुमको

दूर कब तक तुम स्वयं से जाओगे
लौट कर तुम खुद स्वयं में आओगे

तुम तुम्हारा वृत्त ही विस्तार है
वृत्त का विस्तार ही संसार है
साहित्य ही संसार का श्रृंगार है
और जो अतिरिक्त है निस्सार है.

"मानवों में मनुजता ही व्याप्य है
व्याप्य है जो हर दिशा वह काव्य है"

मनुज से ही मनुजता संभाव्य है
मनुजता ही मनुज कुल का काव्य है।

०

अशोक-शर्मा
अभ्युदय-निवास
36- बी मैत्री विहार
कोहका (सुपेला)
– भिलाई –

अवलोकन

प्रश्न देशी हैं घरा के लोग सारे
हैं दिशा की खोज में ये क्लांत हारे
उत्तरित ~~[illegible]~~ होते नहीं जो प्रश्न हैं
सुखाकांक्षी स्वप्न इनके भग्न हैं।

पूर्व के चिंतन नहीं उत्तर दिये
विचार-तकनीकी नहीं उत्तर दिये
साहित्य ने जो भी दिया ~~[illegible]~~ (वर्जित दिया)
कला के लालित्य ने ~~[illegible]~~ (अर्जित दिया)

सोचते जो भोगते प्रारब्ध है
प्रारब्धता से हर कोई आबद्ध है
हारकर बैठे हुए हैं हारकर
झेलते हर आपदा सिर डालकर

यह विगत की सोच का परिणाम है
आहत हुई जिससे सुबह, हर शाम है
जो रहा जिस सोच में वह ही मिला
रोपा किया जो बाग में वह ही खिला।

केन्द्र में ईश्वर रखा, चिंतन दिया
रहस्य की कारा रहा मंथन दिया
खोखले आदर्श का वंदन दिया
जो सघन पीड़ा करे बंधन दिया।

रहस्य में दृष्टा रहा जिस सोच का
रहस्य में कर्त्ता रहा जिस सोच का
उस सोच ने छलनी किया है वक्त को
और प्यासा कर दिया अतृप्त को।

ईश क्या है? अदृश्य है? अज्ञात है
नर श्रेष्ठ हैं जो बस उन्हें ही ज्ञात है
नर श्रेष्ठ को ज्ञाता परम् स्वीकारकर
सर्वज्ञ-पद तक पूजा गया जयकार कर

ईश्वर का वास है उस लोक में
पाप-पुण्य होते तुलित जिस लोक में
पूछा गया उस लोक का स्थान क्या?
लोक के स्थान की पहिचान क्या?

उत्तर मिला यह जानने का हक नहीं
प्रश्न कर्त्ता मूढ़ है लायक नहीं।

केन्द्र में वस्तु रखा, चिंतन दिया
ज्ञान बस विज्ञान है मंथन दिया
पदार्थ से ही चेतना निर्मित हुई (निर्मित हुई)
विज्ञान में ये चेतना वर्णित हुई।

दृश्य तक माना गया अस्तित्व है
आंकलन में आ सका अनित्व है
भोग के साधन निरन्तर खोज कर
विषय के अवयव निरन्तर भोग कर

भोग तक विकसित ~~हुए~~ किया विज्ञान को
भोगी ~~बन~~ बनाकर रख दिया इंसान को

योग में कुयोग में अतृप्तता
साधनों की अल्पता - अतृप्तता
काम के उन्माद में पागल हुआ
अतृप्तता की मार से घायल हुआ

पूछा गया विज्ञान का ~~व~~ उत्कर्ष क्या?
विज्ञान के उत्कर्ष का निष्कर्ष क्या?
उत्तर मिला इस पूछने का अर्थ क्या?
विज्ञान का श्रम होगया है व्यर्थ क्या?

o

मनुज ने द्रष्टा नहीं माना स्वयं को
मनुज ने कर्त्ता नहीं जाना स्वयं को
इसलिये तो हीनता उसमें जगी है
हीनता में दीनता मिलकर पगी है-

हां पशु सा जी रहे निरुपाय हैं
दीन हैं ये हीन हैं, असहाय हैं -
निरुपायता - असहायता वांछा नहीं
मनुज कुल की भी रही कांक्षा नहीं।

रहस्य में कर्त्ता सदा से मानकर
परवश मनुज ने दासता स्वीकारकर
रहस्यवादी सोच को पकड़े रखा
अर्थवादी सोच को जकड़े रखा -

इसलिये योगी नहीं, योगी बना
मानसिकता में स्वयं रोगी बना
रूढ़वादी खोखले चिंतन मिले
भोगवादी दोगले मंथन मिले।

इसलिये तो त्रस्त मानव त्रस्त है
त्रस्तता को झेलने में व्यस्त है
हां विचारों की अंधेरी घाटियां
लांघने में श्रम मनुज का पस्त है -

o

क्रूरता में जी रहे जो लोग हैं
वे समय की देह पर के रोग हैं
स्वयं में भय भीत हैं, भय दे रहे
क्रूरता की थाप, लय में दे रहे

आतंकता के फैलते परिवेश में
असुर विचरण है मनुज गणवेश में
असुरता में जी रहा संसार है
असुरता तो दानवी शृंगार है

दानवी ही संहार का विस्तार है
हर हृदय जलता हुआ अंगार है।

भय-प्रलोभन की बिजलियाँ

भय- प्रलोभन की घिरी हैं बदलियां
द्वेष ईर्षा की मचलती बिजलियां
संसार का नक्शा बहुत विद्रूप है
क्रूरता में तन नहाया रूप है

हां बहुत घायल हुआ है आदमी
हां बहुत पागल हुआ है आदमी
देश मुक्ति चाहता है आदमी
पहिचान अपनी चाहता है आदमी

मुक्त होना चाहता है, पशु-पन से
मुक्त होना चाहता है, असुर-पन से
युक्त होना चाहता है मनुज-पन से
मनुज पन से, देव-पन से, दिव्य-पन से

०

हैं धरा के लोग ये सौभाग्यशाली
द्वार जिनके सोच आई समझ वाली
समझ कर निर्वाह कर जो पाएगा
हर कलुष अपना स्वयं धो पाएगा

प्रश्न-हीना यह धरा हो जाएगी
रोग-हीना यह धरा हो जाएगी
हां मुझे विश्वास है, विश्वास है
दंश-हीना यह धरा हो जाएगी।

०

१२-९-९५
प्रातः ५-३०

अशोक-शर्मा
अभ्युदय-निवास
भिलाई

* शुभ कल्पना गीत *

स्वर्ग होगा इस धरा पर, ऐसी अपनी कल्पना।
शुभ ही होगा इस धरा पर, ऐसी अपनी कल्पना..

वर्षों से अतृप्त जीवन, अर्द्धजाग्रत ही रहा,
जीवन यह जाग्रत ही होगा ऐसी अपनी योजना.
शुभ ----

प्रिय, हित और लाभ तक सीमित अब तक हम रहे,
न्याय, धर्म, सत्य पथ होगा, ऐसी अपनी योजना.
शुभ ...

अस्तित्व में सहअस्तित्वता से एकता का कर निर्वाह,
लक्ष्य स्वराज्य ही होगा ऐसी अपनी योजना ..

शुभ ----
स्वर्ग ----

शुभ संकेत गीत

(संकेत मिले जीवन विद्या से।)

शुभ संकेत जीवन विद्या का आगे बढ़ते जाना है-
शुभ संकेत मिला हम सबको, आगे बढ़ते जाना है
आगे बढ़ते जाना हमको, आगे बढ़ते जाना है ॥

गुरु-शिष्य का नाता यह तो पिता-पुत्र सम्बन्ध जैसा
शुभ प्रयोजन में शिक्षा का हमको बोध कराना है।

शिक्षा और संस्कार से ही व्यक्ति प्रमाणित होता है:
शुभ-शिक्षा संस्कार सुलभ हो पथ ऐसा अपनाना है।

बच्चे ही तो आगे चल विद्या प्रकाश फैलाएंगे
शुभ परम्परा बढ़े सदा, उत्साहित इन्हें बनाना है,
शुभ संकेत ...

वन्दना

पूर्वजों के हैं कृतज्ञ हम सभी ।
प्रेरकों के हैं कृतज्ञ हम सभी ॥

है रहा आशीर्वचन जिनका सदा ।
खुश रहो, सुख से जियो मिलजुल सदा ॥
आभारी हैं उनके निरन्तर हम सभी ।
पूर्वजों के हैं कृतज्ञ हम सभी ॥

उनकी शुभ आकांक्षा से हैं हम सुखी ।
चाह उनकी थी, यही कि हों हम सुखी ॥
प्रसाद इसका कि प्रसन्न हैं हम सभी ।
पूर्वजों के हैं कृतज्ञ हम सभी ॥

व्यक्ति से है व्यक्ति का सम्बन्ध बना ।
विद्या के जो स्रोत उनकी अर्चना ॥
पूज्यता ले हैं उपस्थित हम सभी ।
प्रेरकों के हैं कृतज्ञ हम सभी ॥

शुभ लगन गीत

देखकर यह शुभ लगन,
हम हुए हैं सब प्रसन्न ।

१. अवसर कितनी बार ही,
हम सबने ऐसा पाया ।
जागृति के अर्थ में हो,
एक-दूजे का मिलन ॥

२. आधार है परिवार ही तो,
मानवीय लक्ष्य का ।
पूर्ण होकर सुख से जीलें,
सज उठे यह घर का आँगन ॥

३. परिवार में ही न्याय मिलता,
हो सभी को यह विदित ।
न्याय पूर्ण व्यवहार से ही,
शान्ति पाता है जीवन ॥

४. परम्परा के अर्थ में ही,
शरीर भेद हैं हम हैं पाते ।
क्यों ना हम जागृत हो जायें,
पाया ही है जब ये तन ॥

संकल्प गीत

संकल्प लेना है,
जीवन साथी के संग अब तो सुख से जीना है।
दाम्पत्य सम्बन्ध को,
सब की साक्षी में स्वीकार करना है॥

१. जीवन और शरीर और धन रूपी अर्थ से।
परस्पर पूरकता का निर्वाह करना है॥

२. यह सम्बन्ध पावन कितना सुन्दर और सरल है।
न्याय से अब निश्चित व्यवहार करना है॥

३. सब हों जीते सुखसारे, घर-घर में हर आँगन में।
साकार व्यवस्था करने को ही, धर्म में जीना है॥

नव धार गीत

विद्या की नवधार उज्ज्वल बह चली है ।
विश्वास की नवधार सुज्ज्वल बह चली है ॥

पुष्प उपवन में सुगन्धित खिल उठे हैं ।
शोभित हुआ संगीत जिससे,
-गीत गुञ्जित हो उठे हैं ॥
संगीत की नवतार सरगम बज चली है ।
विश्वास की नवधार सुज्ज्वल बह चली है ॥

परिवार में सम्बन्धों का सम्मान हो चला है।
मूल्यों के निर्वाह का अब ज्ञान हो चला है ॥
न्याय की नवधार मृदुल बह चली है ।
विश्वास की नवधार मृदुल बह चली है ॥

क्यों समझते स्वयं को इस, अस्तित्व में अकेला ?
सहअस्तित्व ही समाया, फिर कहाँ कोई अकेला ?
पूरकता की नवधार निर्मल बह चली है ।
विश्वास की नवधार निर्मल बह चली है ॥

x · x · x · x · x

परम्परा गीत

हैं आने को परम्परा, कि सज रही वसुन्धरा ।
मिलता है जिसमें सबको सुख, है मानवीय परम्परा ॥

सही वही जो मेरे और सबके लिए ही ठीक हो ।
धरती भी बनी रहे उपवन रहे हरा - भरा ॥

जी रहे हैं हम सभी, क्यों और किस लिए ?
सुखी रहें सदा-सदा, सम्पूर्ण हो किया-धरा ॥

मनुज से क्या मनुज का है, सम्बन्ध समझ ले हर कोई ।
सुखी करें सभी को हम, आँगन रहे भरा - भरा ॥

वैभव गीत

एक ही तेरा-मेरा सुख है,
एक ही तेरा-मेरा वैभव ॥

चाहता हूं मैं हर पल सुख से जीना, खुश रहना और खिलना ।
चाहते हो तुम भी तो ये ही, ये ही तेरा-मेरा वैभव ॥

जीवन ही तो सुख है चाहता, सुविधाएं शरीर हित होतीं ।
जीवन हूं मैं, तन है साधन, मानव रूप है इसका वैभव ॥

परिवार में सुखी करें सब, इसी अर्थ में रहते हैं हम ।
जीवन रूप में हम सम्बन्धित, न्याय ही इसका तृप्ति वैभव ॥

मिट्टी, पानी और हवा और पेड़-पौधे, जीव-जन्तु सब ।
प्रकृति सारी मेरी पूरक, पूरकता ही मेरा वैभव ॥

प्रदीप पुरुष
जीवन विद्यालय
बिजनौर

'विवाह संस्कार'
गीत

मात–पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।।

आशीर्वाद से पूर्वजों के, पाया सुखद प्रसाद है।
प्रेरकों की प्ररेणा से, सज रहे परिवार हैं।।
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।
मात–पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

दृष्टा हैं हम सबही मानव, जागृति के ही अर्थ में।
कर्म है करना लक्षित हमको, बस इतना ही सार है।।
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।
मात–पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

आओ गीत खुशी के गायें, इस पावन शुभ बेला पर।
दें आशीष वर–वधु को, हो पूर्ण विवाह संस्कार है।।
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।
मात–पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

स्वस्थ रहो और दीर्घायु हों, तेजस्वी, ओजस्वी हों।
सुन्दर, सुखद हो, समाधान हो, बने सहज परिवार है।।
आशा सबकी पूरी हो, सुख इसका आधार है।
मात–पिता का स्वर्णिम सपना, हो रहा साकार है।।

अस्तित्व

कितना सुन्दर है
कितना सुखद है
अस्तित्व सारा।

इसको समझने से
शोभित हुआ है
आँगन सारा ॥

चलती हवा है
बहता है पानी
सर-सर कल-कल।

शुद्ध मिले हमें
स्वच्छ मिले हमें
चाहते हैं हर पल ॥

सह अस्तित्व समझें
पूरकता समझें
तो स्वस्थ बनें यह संसार सारा ॥

मिट्टी में उगती हैं
(सुन्दर) हरियाली फसलें
लगती हैं सुन्दर।

मिट्टी उपजाऊ हो
फसलें भी पुष्ट हों
लगती तब सुन्दर ॥

कितना सरल है
कितना सहज है
अस्तित्व प्यारा ॥

उत्साह गीत

मेरे साथ चलो,
सब साथ चलो,
प्रसन्नता उत्साह के साथ।

स्वानुशासन से,
स्वराज्य तक,
बढ़ो सभी उत्साह के साथ॥

सबको ही जागृत होना है।
इस बार अवश्य होना है।

लेना संकल्प,
है दृढ़ संकल्प,
बोध पूर्वक उत्साह के साथ॥

चाहे किसी देश का वासी हो।
कोई भी भाषा-भाषी हो।

विनम्र पूर्वक,
प्रेम पूर्वक,
चलो-चलो भई साथ-साथ॥

संग सभी को बैठाकर।
जीवन विद्या को समझाकर।

विश्वास से,
अपनत्व से,
परिवार में जी लें साथ-साथ॥

स्वीकार्य गीत

जीवन ने जीवन को है स्वीकार किया ।
संग-संग सुख से जीना है स्वीकार किया ।

१. जिम्मेदारी और समझ से है जीना ।
परिवारों ने सुन्दर यह परिवार दिया ॥

२. परिवारों में है भूमिका क्या सबकी ?
सुख मिलता यदि प्रामाणिक व्यवहार किया ।

३. जागृत होकर सुख से जीना है हर-पल ।
सुन्दर यह अस्तित्व ने उपहार दिया ॥

४. कामना है मेरी, सबकी, लक्ष्य पूर्ण हो ।
प्रकृत्ति ने सुख-स्रोत सभी को अपार दिया ॥

स्नेह गीत

आयु में हैं जो बड़े और पूर्वजों के स्नेह से ।
सज गये परिवार कितने, प्रेरकों के स्नेह से ॥

१. है रही परिवार में यह चाह सबकी सब सुखी हो।
जी रहे परिवार सुख से, पूर्वजों के स्नेह से ॥

२. परिवार कहते हैं उसी को, जिसमें हर व्यक्ति सुखी हो।
न्याय करना आ गया है, प्रेरकों के स्नेह से ॥

३. कामना है सबकी रहती, सुख मिले हमको निरन्तर ।
हो रही है पूर्ण कामना, पूर्वजों के स्नेह से ॥